

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

संस्कृत विशारद (बी.ए.) – बहिःस्थ

परीक्षा : मे-जून- २०२४

सत्र २ रे

विषय: व्याकरण (22E421)

| | | | |
|----------|--|-----------|------------------------|
| दिनांक : | २३/०५/२०२४ | गुण : १०० | वेळ : स. १०.०० ते १.०० |
| सूचना : | सर्व प्रश्न अनिवार्य | | |
| प्र.१. | अ) संज्ञे स्पष्टीकुरुत । (३ तः २) | | १० |
| | १) नदी | | |
| | २) प्रगृह्यम् | | |
| | ३) प्रातिपदिकम् | | |
| | आ)सूत्राणि स्पष्टीकुरुत । (५ तः ४) | | २० |
| | १) निसमुपविभ्यो ह्वः । | | |
| | २) अपदान्तस्य मूर्धन्यः । | | |
| | ३) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् । | | |
| | ४) धारेरुत्तमर्णः । | | |
| | ५) सप्तम्यधिकरणे च । | | |
| प्र.२. | टिप्पणीद्वयं लिखत । (३ तः २) | | २० |
| | १) आत्मनेपदसूत्राणि | | |
| | २) उपपदचतुर्थी | | |
| | ३) अपादानम् | | |
| प्र.३. | अ) श्लोकद्वयं माध्यमभाषया अनुवदत । (३ तः २) | | १० |
| | १) यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम् । स्वजनः श्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत् ॥ | | |
| | २) यः स्वभावो हि यस्यास्ति स नित्यं दुरतिक्रमः । श्वां यदि क्रियते राजा स किं नाशनात्युपानहम् ॥ | | |
| | ३) आशा नाम मनुष्याणां काचिदाश्चर्यशृङ्खला । यया बद्धाः प्रधावन्ति मुक्तास्तिष्ठन्ति पङ्गवत् ॥ | | |
| | आ) संस्कृतभाषया अनुवदत । (२ तः १) | | १० |
| | १) नदीच्या काठी ऋषींचा आश्रम सुंदर दिसतो. हा झाडांनी आणि रानटी वेलींनी वेढलेला आहे. इथे हा होमाचा धूर झाडांच्या फांद्यांमधून बाहेर येतो. झाडांवर बसलेले हे पक्षी गोड कूजन करतात. | | |
| | २) कोणत्यातरी गावात दीर्घकर्ण नावाचा बोका होता. तो म्हातारा झाला. त्याचे दात आणि नखे गळून गेली. अशक्तपणामुळे त्याला खाणे मिळाले नाही. त्याने विचार केला, 'मी कपटाशिवाय कसा जगू?' | | |

प्र.४ अ) रूपाणि लिखत ।(१२ तः १०)

१०

- १) तद् सर्वनाम - पु. प्रथमा बहु.
- २) पूर्वकालवाचक अव्यय - भ्रम्
- ३) सप्तमी बहुवचन - भित्ति
- ४) तृतीया द्विवचन - उभ
- ५) लङ् प्रथमपुरुष द्विवचन (चिन्त्) प.प.
- ६) लोट् मध्यमपुरुष एक - तङ्
- ७) लिट् प्रथमपुरुष एक - भुज् (आ.प.)
- ८) षष्ठी बहुवचन - अस्मद्
- ९) प्रथमा एकवचन - प्रियवादिन्
- १०) पञ्चमी एकवचन - इन्दु
- ११) हेत्वर्थक तुमन्त - वि + धा
- १२) शतृ प्रत्ययस्त्रीतृतीया एकवचन - वि + ज्ञा

आ) रूपपरिचयं लिखत । (१२ तः १०)

१०

- | | | | |
|-------------|-------------|-----------------|-----------|
| १) शुचम् | २) युवा | ३) भ्रह्मवेदिनः | ४) श्रिया |
| ५) लज्जायाः | ६) व्योम्नि | ७) यस्मै | ८) ददृषुः |
| ९) नभः | १०) सम्पदः | ११) श्रूयताम् | १२) ददति |

प्र.५ अ) सनामनिर्देशं समासविग्रहं कुरुत । (७ तः ५)

५

- | | | | |
|----------------|--------------|---------------|----------------|
| १) परुषाक्षरैः | २) अशोकः | ३) सत्यपूताम् | ४) परकार्यरताः |
| ५) देशान्तरम् | ६) निस्तेजाः | ७) सुरपतिः | |

आ) वाच्यपरिवर्तनं कुरुत । (७ तः ५)

५

- १) सुरपतिः ब्राह्मं पदं वाञ्छति ।
- २) विरलैः गुणाः जायन्ते ।
- ३) वायसैः तस्य मूर्ध्नि स्थितम् ।
- ४) देवाः नः सिद्धिं दिशन्तु ।
- ५) छात्रैः पाठः करणीयः ।
- ६) षट्पदाः आमोदेन पुष्पं तर्कयन्ति ।
- ७) भवान् गीतं गायेत् ।
